नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर
स्थापित २००५ ई.
7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक..... दिनांक 16.12.2019

प्रकाशनार्थ (1)

(महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद–संस्थापक सप्ताह समारोह में चयनित महाविद्यालय के टॉपर्स छात्र–छात्राओं का योग्यता छात्रवृत्ति प्राप्त होते ही खिल उठे चेहरे)

महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् संस्थापक सप्ताह समारोह के अन्तर्गत **योग्यता छात्रवृत्ति कार्यक्रम** में विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के सदस्य, मुख्य अतिथि **धमेन्द्र सिंह** ने कहा कि शिक्षा परिषद के संस्थापकों व्यापक एवं पवित्र दृष्टि का परिणाम है कि प्रतिवर्ष हजारों छात्र–छात्राएं पुरस्कृत एवं सम्मानित हो रहें है। ऐसे आयोजनो से विद्यार्थियों में स्वस्थ्य प्रतिस्पर्धा का विकास होता है। **पुरस्कार एवं सम्मान विद्यार्थी जीवन मे प्रगति का पाथेय है** और योग्यता और उत्कृष्टा में निरंतरता का मार्ग प्रसश्त करने का बड़ा माध्यम भी है। शैक्षिक संस्थाओं और शिक्षकों की भूमिका विद्यार्थियों के कौशल को तरासते हुए उन्हें निरंतर आगे बढने के लिए प्रेरित करना है। प्रतिभावान विद्यार्थियों को पहचान कर उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में सामर्थ्यवान बनाने के लिए शिक्षण संस्थाओं को नित्य नये प्रयोग करने चाहिए। प्रतिभावान और योग्य विद्यार्थियों को गढ़ते हुए उन्हें जिम्मेदार और राष्ट्रभक्त नागरिक बनाने का पवित्र उद्देश्य महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद का मुख्य ध्येय है। अपने इस संकल्प को जितना ही साकार स्वरूप हम देंगे वही हमारी ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के प्रति श्रद्धांजलि होगी।

इस अवसर पर दिग्विजयनाथ पी.जी. कॉलेज के प्राचार्य एवं संस्थापक सप्ताह समारोह के संचालन समिति के प्रभारी **डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह** ने कहा कि पुरस्कारों से विद्यार्थियों में लगन और इच्छा शक्ति को और बेहतर करनी की प्रेरणा मिलती है। भविष्य में और अच्छा करने की संकल्पना पैदा होती है। यही संकल्पना हमें निरंतर और अच्छा करने तथा सोचने का मार्ग निर्धारित करती है। किन्हीं कारणों से जो पुरस्कृत नहीं हो पा रहें है उन्हें भी इस प्रकार के आयोजन सर्वाधिक प्रेरित करते हैं। इसके लिए शिक्षकों की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। विद्यार्थी ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है इसे सवारना और गढ़ना शिक्षक के हाथ में है। शिक्षक उस कुम्हार की भांति होता है जो अपनी क्षमता और दृष्टि से किसी वस्तु को सुन्दर और उपयोगी बनाता है। पुरस्कार और सम्मान के द्वारा प्रतिभाओं को और निखारनें का अवसर तो बढ़ता ही है साथ ही सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह भी होता है।

कार्यक्रम में बोलते हुए **प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव** ने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित संस्थान ही नहीं है वरन् चिकित्सा सेवा एवं समाज सेवा जैसे लोकमंगल का प्रकल्प भी है। इस वर्ष शिक्षा परिषद के संस्थापक ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज का 125वां जयन्ती वर्ष एवं ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ महाराज का शताब्दी वर्ष होने के कारण योग्यता एवं प्रतिभा के आधार पर यह पुरस्कार वितरण

समारोह और भी मूल्यवाची हो जाता है। पुरस्कार प्राप्त विद्यार्थियों के चेहरे आज खिल उठे हैं। उससे भी महत्वपूर्ण यह है कि पुरस्कार न प्राप्त करने वाले साथ ही विद्यार्थियों ने जिस तरह से उनका उत्साहवर्धन किया है। यह सकारात्मकता महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् का ही पूण्य प्रताप ही है।

समारोह के संयोजक डॉ. शिवकुमार वर्नवाल, सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रभारी दीप्ति गुप्ता तथा संचालन डॉ. अविनाश प्रताप सिंह ने किया।

इन्हें प्राप्त हुआ योग्यता छात्रवृत्ति

प्रिया सिंह पुत्री श्री मुन्ना सिंह, बी.एस–सी. भाग–एक, प्रीति गुप्ता पुत्री श्री राजेश गुप्ता, बी.एस–सी. भाग–एक, प्रज्ञा नन्द शर्मा पुत्र श्री राम नरायण शर्मा, बी.एस–सी. भाग–दो, रितुराज सिंह पुत्र श्री सन्त सिंह, बी.एस–सी. भाग–दो, शिवम कु. जायसवाल पुत्र श्री अमर प्रकाश जायसवाल, बी.एस–सी. भाग–दो, प्रशान्त राय पुत्र श्री रजनीकान्त राय, बी.एस–सी. भाग–तीन, श्वेता मिश्रा पुत्री श्री प्रमोद कुमार मिश्रा, बी.एस–सी. भाग–तीन, सुधा प्रजापति पुत्री श्री दहारी प्रजापति, बी.ए. भाग–एक, कृति सिंह पुत्री श्री नवीन कुमार सिंह, बी.ए. भाग–एक, खुशबू चौरसिया पुत्री श्री श्रीराम चौरसिया, बी.ए. भाग–दो, बृजमोहन यादव पुत्र श्री राकेश कु. यादव बी.ए. भाग–दो, ललिता गुप्ता पुत्री श्री सुरेश गुप्ता, बी.ए. भाग–तीन, अराधना गौड़ पुत्री श्री सुबाष गौड़, बी.ए. भाग–तीन, सतीश कु. वर्मा पुत्र श्री फरियावन वर्मा, बी.काम. भाग–एक, बेबी मौर्या पुत्री श्री जयनाथ मौर्या,बी.काम. भाग–एक, अभिषेक चतुर्वेदी पुत्र श्री रामअजोर चतुर्वेदी, बी.काम. भाग–दो, नेहा शर्मा पुत्री श्री राजीव शर्मा, बी.काम. भाग–तीन, रजवंत सिंह पुत्र श्री फन्नी सिंह, एम.एस–सी. प्रथम वर्ष, अनुपमा सिंह पुत्री श्री दिनेश कुमार सिंह, एम.एस–सी. प्रथम वर्ष, दिनेश पाल पुत्र श्री भरथ पाल, एम.एस–सी. अन्तिम वर्ष, चन्दा सिंह पुत्री श्री गिरिजा शंकर सिंह, एम.एस–सी. अन्तिम वर्ष, सीमा पुत्री श्री समद अली, एम.एस–सी. अन्तिम वर्ष, अंजलि सिंह पुत्री श्री मैनेजर सिंह, एम.एस–सी. अन्तिम वर्ष, राहुल गिरी पुत्र श्री चन्द्र प्रकाश गिरी, एम.ए. प्रथम वर्ष, ऋषव मिश्रा पुत्र श्री विश्व विजय मिश्रा, एम.ए. प्रथम वर्ष नितेश कु. मिश्रा पुत्र श्री नमो नारायण मिश्रा, एम.ए. अन्तिम वर्ष, श्रद्धा शर्मा पुत्री श्री उमेश चन्द्र शर्मा एम.ए. अन्तिम वर्ष. सुशील कुमार सिंह पुत्र श्री नन्दलाल सिंह, एम.ए. प्रथम वर्ष, मोनिका नायक पुत्री श्री दिनेश नायक, एम.ए. प्रथम वर्ष, रिंकी पुत्री श्री रविन्द्र विश्वकर्मा, एम.ए. प्रथम वर्ष, पुष्पा पुत्री श्री ज्ञानचन्द, एम.ए. प्रथम वर्ष, प्रियंका सिंह पुत्री श्री रामलाल सिंह, एम.काम. प्रथम वर्ष, अंकिता सिंह पुत्री श्री घनश्याम सिंह एम.काम. अन्तिम वर्ष, मनोरमा निषाद पुत्री श्री अम्बिका निषाद, एम.काम. अन्तिम वर्ष, अम्बिकेश तिवारी पुत्र श्री उमेश तिवारी, बी.एड. प्रथम वर्ष, शिवशंकर प्रसाद पुत्र श्री सन्त प्रसाद, बी.एड. प्रथम वर्ष, नीलम दूबे पुत्री श्री सुरेन्द्र दूबे, बी.एड. अन्तिम वर्ष, सिद्धार्थ कुमार शुक्ला पुत्र श्री संजय शुक्ला, बी.एड. अन्तिम वर्ष, प्रियंका सिंह पुत्री श्री विजयदीप सिंह, बी.एड. अन्तिम वर्ष।

7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

प्रकाशनार्थ–02

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर के रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग में आज **विजय दिवस** के अवसर पर एक विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस आयोजन में मुख्य वक्ता एवं अतिथि के रुप में बोलते हुए **डॉ. अमित त्रिपाठी** ने बताया कि आज 16 दिसम्बर का दिन भारत के इतिहास का एक स्वर्णिम दिन है और इस दिन भारत ने अपना इतिहास ही नहीं बल्कि अपना भूगोल भी बदल दिया। अंतर्राष्ट्रीय स्त्रातजिक प्रांगण में पाकिस्तान पर भारत की विजय कई दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण थी। भारत ने अपना पड़ोसी बदल दिया। जो पूर्वी पाकिस्तान के नाम से जाना जाता था वह बांग्लादेश के नाम से एक स्वतंत्र देश बन गया। कुल मिलाकर एक लाख से ऊपर सैनिक व असैनिक युद्ध बन्दी बनाये गये, जो विश्व के इतिहास की सबसे बड़ी सैन्य समर्पण की घटना है। भारत के स्थल, नभ तथा नौसेनाओं ने जो अद्भुत पराक्रम इस युद्ध में दिखाई उसने विश्व में भारत की शक्ति का लोहा मनवा दिया। इस युद्ध में भारत ने एक साथ दो मोर्चों पर विजय प्राप्त की। इस कार्य में भारतीय सेनाओं के साथ–साथ भारत की आसूचना एजेंसियों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

द्वितीय वक्ता के रूप में सुधी रंजन लाहिरी महाविद्यालय, पश्चिम बंगाल के प्रवक्ता **श्री सुब्रत रे** ने सन् 1971 के भारत–पाकिस्तान के बीच युद्ध का वर्णन करते हुए, युद्ध पूर्व तथा युद्ध पश्चात की विभिषिका पर अपना प्रकाश डाला। उन्होंने पूर्वी पाकिस्तान में पश्चिमी पाकिस्तान द्वारा किये जा रहे सामूहिक नरसंहार तथा बर्बरता पूर्व कृत्यों द्वारा गैर–मुस्लिमों पर हो रहे अत्याचारों की विवेचना करते हुए युद्ध में भारत की भूमिका की सराहना की।

इस आयोजन का संचालन रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन के प्राध्यापक श्री रमाकान्त दूबे ने किया तथा आभार ज्ञापन विभागाध्यक्ष डॉ. अभिषेक सिंह जी ने किया। इस आयोजन में विभाग के स्नातक प्रथम वर्ष, द्वितीय वर्ष एवं तृतीय वर्ष के सभी विद्यार्थियों ने भाग लिया।

(डॉ. राहुल मिश्रा)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी